ISSN : 2319-6513

साहित्य वीथिका

श्री सर्वोदय एजूकेशन ट्रस्ट संचालित

Sahitya Veethika

An International Peer Reviewed Referred Quarterly Research Journal of Literature

(त्रैमासिक अंतर्राष्ट्रीय शोध-पत्रिका)

(डॉ. पारूकान्त देसाई 'कबिरा' को साहित्यिक श्रद्धांजलि)

वर्ष : 13 अंक : 22-23 जून-सितम्बर-दिसम्बर-2022 संयुक्तांक

संपादक : डॉ. दिलीप मेहरा

अनुक्रम

1. विराट व्यक्तित्व के धनी, मेरे हमदम, मेरे दोस्त
डॉ. गिरीश जे. त्रिवेदी 05
2. साहित्य के उद्दीप्त कांत : प्रो. पारूकान्त
डॉ. दिलीप मेहरा 07
3. उदार चरितानाम् तु वसुधैव कुटुंबकम्
श्रीमती लीना देसाई 09
4. दया, प्रेम और विद्वता के धनी : मेरे पिता डॉ. पारूकांत देसाई
डॉ. पूरवी देसाई प्रजापति 10
5. डॉ. पारुकांत देसाई रचित काव्य संग्रह ''भेदकु खोला कबिरा बोला'' का आत्मदर्शन
सतीन देसाई ''परवेज़'' दीप्ति ''गुरु'' 12
6. डॉ. पारूकांत देसाई का कविता साहित्य : संवेदनात्मक पक्ष
डॉ. संगीता चौहान 17
7. 'मानस माला' की भाव व्यंजना
डॉ. ईश्वर आहिर 21
8. संस्थानिक छद्म और प्रयाग पीठाधीश्वर
आचार्य शिव प्रसाद शुक्ल 23
9. स्त्री-विमर्श की संघर्ष गाथा : 'जो कहा नहीं गया'
प्रा. रवींद्र पुंजाराम ठाकरे,
प्रा. डॉ. रघुनाथ नामदेव वाकले 27
10. तीर्थ यात्रा साहित्य : भारतेन्दुजी की हरिद्वार यात्रा वृत्तांत के विशेष सन्दर्भ में
डॉ. निरुबेन हरसुखभाई बोरिसानिया 30
11. भारतीय यात्रा साहित्य का इतिहास
डॉ. मेरगसिंह ए. यादव 33
12. गुजरात की समकालीन हिंदी कविता में हास्य व्यंग्य
राजपूत रश्मि सिंह 36
13. मानक हिन्दी का स्वरूप
डॉ. श्रवण कुमार 39
14. नाटक और रंगमंच का सम्बन्ध : राजस्थान के संदर्भ में
डॉ. मनोज कुमार पंड्या 44
15. 'साँप' में है हाशिए के समाज का सच
राजगोपाल सिंह वर्मा 48
16. मधु कांकरिया के उपन्यासों में नारी विमर्श
जय सिंह 51
17. भारतीय साहित्य में धर्म और दर्शन
सुशीला प्रजापति 54
18. स्वतंत्रता आंदोलन में भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटकों और निबंध की भूमिका
जितेंद्र वाघेला 56
19. महाप्राण 'निराला' और उनकी कविता
डॉ. नवीन नंदवाना 60
20. 'कामायनी' काव्य में अस्तित्ववादी मूल्य बोध
डॉ. श्रवण कुमार 65
21. दादूपंथ के आध्यात्मिक योगी संत कवि : [illegible]
वीरमाराम पटेल 69
22. अभिशप्त जीवन की दास्तान : जिंदगी 50-50
डॉ. संदेशा भावसार 73
23. प्रभा पारीक की कहानियों में बाल मानस
डॉ. दिलीप मेहरा 76
24. अलौकिक गजल-शिल्पी
सतीन देसाई ''परवेज'' दीप्ति ''गुरु'' 79
25. खुदाई इंसानियत की झलक
डॉ. दक्षा गौरांग भट्ट 83
26. सपना विजापुरा की गज़ल 'अच्छा लगता है' का रसदर्शन
सतीन देसाई परवेज दीप्ति ''गुरु'' 85
27. 'सपना' की रूहानियत
सतीन देसाई परवेज दीप्ति ''गुरु'' 86
28. सपना विजापुरा की रचनाएँ
सपना विजापुरा 89
29. जिज्ञा त्रिवेदी की गज़लें 92
गज़ल 93
30. पुस्तक समीक्षा : नेहा बाजपेई
स्त्री जीवन की महागाथा 'मुट्ठी भर नींद' 94

हिंदी गजल संग्रह 'सजदा' एवं गजलकार 'सतीन देसाई परवेज़' का लोकार्पण/16
आदर्स एंड कॉमर्स कॉलेज माणसा में एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी/35
कर्णाटक कलबुरगी में राष्ट्रीय संगोष्ठी/50
पुस्तक लोकार्पण एवं विशेष व्याख्यान/53
एस.एन.डी.टी. वि.वि. में राष्ट्रीय संगोष्ठी/7…

23.
प्रभा पारीक की कहानियों में बाल मानस

-डॉ. दिलीप मेहरा

'सुमन बनें हम क्यारी के, बन उपवन महकें।
चलो दोस्त, हम सूरज बनकर, धरती पर चमकें।'
–कृष्ण शलभ

बाल साहित्य के अंतर्गत वह साहित्य आता है, जिसका लेखन बच्चों के मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर किया गया हो। हिंदी साहित्य में बाल साहित्य की परंपरा बड़े पैमाने पर विकसित हुई है। पंचतंत्र की कथाएं बाल साहित्य का महत्वपूर्ण स्रोत माना गया है। इसके साथ–साथ पंचतंत्र हितोपदेश, अमर कथाएँ, अकबर बीरबल के किस्से आदि को बाल साहित्य में सम्मिलित किया गया है। बाल मानस की जिज्ञासावृत्ति को संतुष्ट करने के लिए कहानी सुनाने की परंपरा बहुत प्राचीन है। प्रत्येक व्यक्ति अपने बचपन में कहानियां और कविताओं को सुनने और पढ़ने का सकारात्मक अनुभव तो किया होगा। कुल मिलाकर बाल साहित्य विभिन्न भाषा कौशलों को विकसित करते हुए उनके स्वानुभवों से परे बाल दुनिया के समृद्ध बनाने के लिए एक विशाल स्त्रोत का प्रतिनिधित्व करते हैं।

समकालीन बाल साहित्यकारों में प्रभा पारीक का स्थान महत्वपूर्ण है। उन्होंने बाल मानस जगत की विविध परतों को ध्यान में रखकर कहानियों का सृजन किया है। प्रभा पारीक का बाल कहानी जगत अनेक अनुभवों को साझा करता है। वे अपनी कहानियों में जीव जंतु, पर्यावरण, परिवार,स्कूल, राजा रानी आदि को चित्रित कर बाल मानस पटल पर गहरा प्रभाव डालने का प्रयास किया है। उनकी कहानियों में मनोरंजन के साथ–साथ शैक्षणिक दृष्टिकोण परिलक्षित होता है। मनोरंजन, दया, प्रेम, साहस–वीरता, कौतूहल, जिज्ञासा जैसे बाल मानस के आयामों को अपनी कहानियों में चित्रित किया हैं। प्रभा पारीक की कहानियों में बाल मानस पटल का व्यापक चित्रण मिलता है।

'जंगल का बाल मंदिर' कहानी में बाल मंदिर की परिकल्पना की है। कहानी में शिक्षा प्रणाली का दर्शन होता है। छोटे बच्चे बाल मंदिर जाने के लिए उत्सुक होते हैं। इसी उत्सुकता को ध्यान में रखकर प्रभा पारीक ने जंगल के बाल मंदिर का संयोजन किया है। अक्सर बाल मानस पर एक सवाल पैदा किया जाता है कि मनुष्य का बाल मन्दिर हो सकता है लेकिन जंगल का बाल मंदिर कैसा होगा? कहानीकार ने कहानी में बाल मानसवृत्ति को विकसित करने के लिए जंगल में बाल मन्दिर की परिकल्पना की है। अतः लेखिका ने पशु पक्षियों के बाल मंदिर का निर्माण किया है। कहानी में चुनमुन चिड़िया संबोधित करते हुए कहती है– "आपने देखा होगा न कि मनुष्य भी अपने बच्चों को कुछ समय के लिए दूसरे स्थान पर भेजते हैं। वहां उन्हें कोई और संभालता है और वापस घर जाने पर पुनः माता पिता। क्यों न हम भी ऐसा कोई स्थान निश्चित करें जहां बच्चों को घर से अलग वातावरण मिले।"[1] इस प्रकार जंगल के सभी पशु–पक्षी आपस में चर्चा करते हुए दिखाई देते हैं। शेर सिंह के अनुसार जानवर और पक्षियों का बाल मंदिर संभव नहीं है। तभी चुन्नी लोमड़ी ने इस समस्या का समाधान बताते हुए सुझाव दिया– "सभी जानवर और पक्षी यदि बाहर काम पर निकलते समय अपने बच्चों को भी अपने अपने साथ ले जाए, जब काम करें उन्हें भी सिखाते रहे।"[2]

प्रस्तुत कहानी में कहानीकार ने यह संकेत किया है कि बच्चों को बाल मंदिर की शिक्षा के साथ साथ अपने घर के कार्य करते समय भी शिक्षा दे सकते हैं। 'संभाली बुराई की थैली' कहानी में नंदनवन के जानवरों की अभिमानिवृत्ति को प्रस्तुत किया है। इस वन के जानवर एक दूसरे की बुराई और शिकायत करने में व्यस्त रहते हैं। शेर सिंह को जंगल के इसी वातावरण की भनक लगती है। इसे पता चलता है कि नंदनवन में भाईचारा और प्यार गायब हो गया है। इसलिए शेरसिंह सभी जानवरों को दो–दो छोटी थैलिया थमाते हुए कहता है– "तुम्हें सदा इन थैलियों को अपने गले में टांग कर रखना होगा। तुम्हें करना यह है कि एक थेली